

# दानिएल की पुस्तक - संख्या चौरासी

लाओदिकियाई एडवेंटिज़्म की चार पीढ़ियों का अनावरण: बाइबिलीय समांतरता और भविष्यवाणी संबंधी परीक्षण के माध्यम से एक यात्रा

Jeff Pippenger

2024-02-17

सत्य दो या तीन गवाहों की गवाही पर स्थापित होता है, और यह जकेल के आठवें अध्याय की चार घृणित बातों का लाओदीकियाई एडवेंटवाद की चार पीढ़ियों के रूप में किया गया अनुप्रयोग कई साक्षियों से पुष्ट होता है। पहले के लेखों में यह दिखाया गया था कि प्रकाशितवाक्य के अध्याय दो और तीन की सात कलीसियाएँ न केवल प्रेरितों के समय से लेकर संसार के अंत तक आधुनिक इस्राएल के इतिहास का प्रतिनिधित्व करती हैं, बल्कि यह भी कि वही सात कलीसियाएँ मूसा के समय से लेकर मसीह के समय तक प्राचीन इस्राएल के इतिहास का भी प्रतिनिधित्व करती हैं।

इफिसुस की कलीसिया ने प्रारम्भिक मसीही कलीसिया का, और साथ ही मूसा से लेकर न्यायियों के समय तक के प्राचीन इस्राएल का भी प्रतिनिधित्व किया। स्मिर्ना की कलीसिया ने शिष्यों के समय से लेकर रोमी सम्राट कॉन्स्टेंटाइन तक के उत्पीड़न के काल का प्रतिनिधित्व किया, और साथ ही न्यायियों के उस समय का भी, जब हर व्यक्ति अपनी ही दृष्टि में जो ठीक लगा वही करता था। पर्गामोस की कलीसिया ने कॉन्स्टेंटाइन से लेकर सन 538 में पापत्व तक के समझौते के काल का प्रतिनिधित्व किया; और साथ ही उस काल का भी, जब प्राचीन इस्राएल ने परमेश्वर को अस्वीकार कर एक राजा चुना, और अपने चारों ओर के मूर्तिपूजक राज्यों के साथ लगातार समझौता करता रहा। चौथी कलीसिया थायातीरा, जिसका प्रतिनिधित्व ईज़ेबेल करती है, सन 538 से 1798 तक के पापाई शासन का काल है, और साथ ही बाबुल में प्राचीन इस्राएल की सत्तर वर्ष की बंधुवाई का भी।

वे चार कलीसियाएँ एडवेंटिज़्म की चार पीढ़ियों का भी प्रतिनिधित्व करती हैं, और यह साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं कि यह जकेल की चार घृणित बातों को उन चार पीढ़ियों पर कैसे लागू किया जाता है। 1863 के विद्रोह का प्रतिनिधित्व प्राचीन इस्राएल की पहली पीढ़ी द्वारा किया गया है, जैसा कि हारून के सोने के बछड़े के विद्रोह से स्पष्ट होता है। पहली पीढ़ी में इफिसुस की कलीसिया को दिया गया परामर्श शामिल है, जो यह दर्शाता है कि परमेश्वर के लोगों ने अपना पहला प्रेम छोड़ दिया था, और उन्हें मन फिराकर अपने पहले प्रेम पर लौटना आवश्यक था। 1863 में, पहले प्रेम का जो प्रतिनिधित्व विलियम मिलर के रत्नों (मौलिक सत्य, विशेषकर 'सात गुना') द्वारा किया गया था, उसे एक ओर रख दिया गया, और परमेश्वर के लोगों को लौट आने का परामर्श दिया गया।

परन्तु मुझे तेरे विरुद्ध यह है, कि तूने अपना पहला प्रेम छोड़ दिया है। इसलिए स्मरण कर कि तू कहाँ से गिरा है, और मन फिरा, और पहले के काम कर; नहीं तो मैं शीघ्र ही तेरे पास आकर तेरे दीवट को उसके स्थान से हटा दूँगा, यदि तू मन न फिराए। प्रकाशितवाक्य 2:4, 5.

मिलराइटों ने धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद से संघर्ष किया था, जिसे यिर्मयाह ने "ठट्टा करने वालों की मंडली" कहा था, और वे दर्शन के आने की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते रहे, क्योंकि जब वह आएगा तो वह झूठ नहीं बोलेगा। "ठट्टा करने वालों की मंडली" का प्रतिनिधित्व उस बूढ़े नबी ने किया जिसने यहूदा के उस नबी से झूठ बोला था, जिसने यारोबाम की कपटपूर्ण उपासना पर फटकार सुनाई थी।

मैं तेरे काम, तेरे परिश्रम और तेरे धैर्य को जानता हूँ; और यह भी कि तू उन्हें जो बुरे हैं, सह नहीं सकता; और तूने उनकी परीक्षा की है जो कहते हैं कि वे प्रेरित हैं, और हैं नहीं, और तूने उन्हें झूठा पाया है; और तूने सहा है, और धैर्य भी रखा है, और मेरे नाम के लिये परिश्रम किया है, और तूने हिम्मत नहीं हारी। प्रकाशितवाक्य 2:2, 3।

स्मिर्ना की दूसरी कलीसिया प्रारंभिक मसीही कलीसिया में हुए उत्पीड़न के उस काल का प्रतिनिधित्व करती थी, जिसमें सच्चे शहीद थे, और कुछ ऐसे लोग भी, जिन्होंने कम पवित्र उद्देश्यों के कारण अपने ऊपर स्वयं उत्पीड़न ले लिया था। यह 'न्यायियों के समय' का भी प्रतिनिधित्व करती थी, जब प्राचीन इस्राएल में हर व्यक्ति अपनी ही दृष्टि में जो ठीक लगता था, वही करता था। 1888 में शुरू हुई विद्रोह की पीढ़ी ने भविष्यवाणी की आत्मा, उस समय के चुने हुए संदेशवाहकों और पवित्र आत्मा के विरुद्ध उत्पीड़न के एक काल को चिन्हित किया। इसने एक ऐसा काल आरंभ किया जब लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म के पुराने नेताओं ने अपनी ही दृष्टि में जो ठीक लगा, वही करने का चुनाव किया, जैसा कि Kellogg, Prescott और Daniells जैसे व्यक्तियों के उदाहरण से स्पष्ट है।

उस समय के गिने-चुने विश्वासयोग्य लोगों को एक ऐसे वर्ग के साथ प्राणघातक आध्यात्मिक संघर्ष में होना था, जो अपने को यहूदी बताते थे, पर थे नहीं। नेतृत्व के पदों पर होने के बावजूद, वे शैतान की सभा के थे, जैसा कि सिस्टर वाइट की गवाही से स्पष्ट है, जिन्होंने पहचाना कि कुछ को "स्वर्ग से निकाले गए स्वर्गदूतों" द्वारा संचालित किया जा रहा था। वे अपने को बुद्धिमान होने का दावा करते थे, पर मूर्ख थे। उस काल में बुद्धिमानों पर कोई दोषारोपण नहीं किया गया, बल्कि मृत्यु तक विश्वासयोग्य बने रहने का प्रोत्साहन दिया गया। 1915 में, सिस्टर वाइट के अंतिम शब्द थे, "मैं जानती हूँ कि मैंने किस पर विश्वास किया है," क्योंकि वे मृत्यु तक विश्वासयोग्य रही थीं।

मैं तेरे कामों, और क्लेश, और दरिद्रता को जानता हूँ (परन्तु तू धनी है); और उन लोगों की निन्दा को भी, जो कहते हैं कि वे यहूदी हैं, और हैं नहीं, परन्तु शैतान की सभा हैं। जो बातें तुझे सहनी होंगी, उनसे मत डर; देख, शैतान तुम्हें परखने के लिए तुम में से कुछ को बंदीगृह में डाल देगा; और तुम्हें दस दिनों तक क्लेश होगा। मृत्यु तक तू विश्वासयोग्य बना रह, और मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा। प्रकाशितवाक्य 2:9, 10.

पेर्गामोस की कलीसिया ने सम्राट कॉन्स्टेंटाइन के समय सत्य और त्रुटि, पैगनवाद और मसीही धर्म के बीच हुए समझौते का, और साथ ही राजाओं के इतिहास के दौरान प्राचीन इस्राएल में हुए समझौते का प्रतिनिधित्व किया। यह सत्य और त्रुटि के मिश्रण का प्रतीक था, जो केवल त्रुटि ही उत्पन्न कर सकता है। इसका प्रतिनिधित्व 1919 के बाइबल सम्मेलन ने किया, जहाँ "मसीह का सिद्धांत" नामक पुस्तक का प्रकाशन इस उद्देश्य से कराया गया कि एक ऐसा एडवेंटिस्ट संदेश तैयार किया जाए जो धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद के झूठे सुसमाचार का और भी निकट प्रतिनिधित्व करे। एडवेंटिज़्म की तीसरी पीढ़ी में ही सत्य के गंभीर समझौते हुए।

इसी पीढ़ी में, 1919 से शुरू होकर, चर्च ने वह समझौता शुरू किया जिसने चर्च मैनुअल को जन्म दिया। इसी पीढ़ी में, 1919 से शुरू होकर, चर्च ने वह समझौता शुरू किया जिसके कारण स्वास्थ्य और धर्म दोनों के विद्यालयों में मान्यता आवश्यक हो गई। इसी पीढ़ी में आधुनिक कैथोलिक-आधारित बाइबलों को अपनाने की शुरुआत हुई। इसी इतिहास में नेतृत्व ने खुलेआम ईसाई-विरोधी शासन व्यवस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करने की तत्परता दिखाई।

यह प्रथा अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान अपने शैशव चरण में आरंभ हुई, जब लाओदिकियाई नेतृत्व ने संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के साथ एक कानूनी संबंध स्थापित किया, ताकि कलीसिया के उन युवकों के लिए बेहतर परिणाम सुनिश्चित किए जा सकें जिन्हें अमेरिकी इतिहास के सबसे घातक युद्ध में भर्ती किया जाना था; और यही कार्य प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत में तब दोहराया गया, जब जनरल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष ए. जी. डेनियल्स ने जर्मन सरकार से संपर्क कर जर्मनी को युवकों को सेना में भर्ती करने और उन्हें सैन्य सेवा के लिए मजबूर करने, हथियार उठाने, तथा सब्त की उपेक्षा करने की स्वीकृति दे दी। डेनियल्स की उस कार्रवाई के परिणामस्वरूप एक विभाजन हुआ, जिससे सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट रिफॉर्म आंदोलन के विभिन्न गुट पैदा हुए, जो आज तक मौजूद हैं।

वह समझौता हितलर के नाज़ी जर्मनी के साथ जारी रहा, और उसके बाद सोवियत संघ का गठन करने वाले राष्ट्रों के साथ भी, और आज भी चीन जैसे शासन में वह बनाए रखा जाता है। शासन-कला के संदर्भ में तीसरी पीढ़ी का यह समझौता इस्राएल के प्राचीन राजाओं और कॉन्स्टेंटाइन के समझौते द्वारा निरूपित किया गया था, जैसा कि पेर्गामोस की कलीसिया में प्रतीकित था। वह काल उसकी कलीसियाई व्यवस्था के उस समझौते का भी प्रतिनिधित्व करता था, जो प्रेस्कॉट की "The Doctrine of Christ" द्वारा प्रस्तुत शांति और सुरक्षा के मिथ्या सुसमाचार के साथ किया

गया था।

मैं तेरे कामों और जहाँ तू रहता है, उस स्थान को जानता हूँ—यहाँ तक कि जहाँ शैतान का सिंहासन है; और तू मेरे नाम को दृढ़ता से थामे हुए है, और तूने मेरे विश्वास का इन्कार नहीं किया, यहाँ तक कि उन दिनों में भी, जब अन्तिपास, जो मेरा विश्वासयोग्य साक्षी था, तुम्हारे बीच मारा गया, जहाँ शैतान रहता है। परन्तु मुझे तेरे विरुद्ध कुछ बातें हैं, क्योंकि तेरे यहाँ ऐसे लोग हैं जो बिलआम की शिक्षा को पकड़े हुए हैं, जिसने बालाक को यह सिखाया कि वह इस्राएल के पुत्रों के आगे ठोकर का कारण रखे, कि वे मूर्तियों को चढ़ाई हुई वस्तुएँ खाएँ और व्यभिचार करें। प्रकाशितवाक्य 2:13, 14.

यह व्यभिचार जनरल कॉन्फ्रेंस के उस कार्य की पहचान कराता है, जिसमें उन्होंने भ्रष्ट सरकारों के साथ आवश्यक कार्य-संबंध बनाए रखने के बहाने नाज़ी जर्मनी और सोवियत संघ जैसे राष्ट्रों के साथ अपने को जोड़ लिया, और उन राष्ट्रों के विश्वासयोग्य लोगों की अनदेखी की, जो उन्हीं शासन-व्यवस्थाओं द्वारा सताए जा रहे थे जिनके साथ वे जुड़ गए थे। मूर्तियों को चढ़ाया गया भोजन, धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद और कैथोलिकवाद की उस झूठी कार्यप्रणाली का प्रतीक था, जो उस समय लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म के विश्वविद्यालयों में दृढ़ता से स्थापित हो चुकी थी, और जिन्होंने धर्म तथा स्वास्थ्य, दोनों में, धर्मत्यागी कार्यप्रणालियों के दिशानिर्देशों के अधीन होने को स्वीकार कर लिया था।

यीशु ने तीसरी पीढ़ी का अंत उसी तरह दिखाया जैसा उसने उसका आरम्भ दिखाया था, क्योंकि उसने 1957 में प्रकाशित 'Questions on Doctrine' नामक पुस्तक के प्रकाशन द्वारा चौथी पीढ़ी के आगमन को चिह्नित किया, जिसने सत्य और धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद तथा कैथोलिक धर्म के गलत विचारों के बीच विद्यमान उद्धार संबंधी मूलभूत भेद को पूरी तरह अस्वीकार कर दिया। उस पुस्तक में निस्संदेह कई गलत शिक्षाएँ हैं, पर मूलतः वह यह सिखाती है कि जब तक दूसरे आगमन पर किसी व्यक्ति को चमत्कारिक रूप से बदल न दिया जाए, तब तक मसीह में विजयी जीवन जीना असंभव है। इस पुस्तक ने उस पीढ़ी की शुरुआत को चिह्नित किया जिसमें पच्चीस प्राचीन पुरुष सूर्य के आगे झुकने वाले थे। शीघ्र आने वाले 'रविवार के कानून' के समय रविवार-उपासना को स्वीकार करने हेतु लाओदीकिया की एडवेंटिस्ट कलीसिया को अनुमति देने वाले आवश्यक राजनीतिक और धार्मिक तत्व आ चुके थे।

यहजेकल की चौथी घृणित बात तब घटित होती है जब अध्याय नौ में कुछ विश्वासयोग्य जन अपने माथों पर मुहर पा रहे होते हैं, ठीक उससे पहले जब विनाशक स्वर्गदूत अपना कार्य आरम्भ करने वाले होते हैं। यह दर्शन अध्याय आठ की पहली आयत में, छठे वर्ष के छठे महीने के पाँचवें दिन आरम्भ होता है। यह दर्शन उन पर न्याय के निर्णय का क्रियान्वयन होने से एक दिन पहले शुरू होता है जो सूर्य के आगे झुकते हैं, जो पापाई अधिकार का चिह्न है, और उसके नाम की संख्या "666" है।

एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी का कार्य 11 सितंबर, 2001 को इस्लाम की तीसरी विपत्ति द्वारा पृथ्वी के पशु पर किए गए हमले के साथ आरंभ हुआ। उस हमले ने राष्ट्रों को क्रोधित कर दिया, और अंतिम वर्षा के आगमन को चिह्नित किया। परंतु अंतिम वर्षा को केवल वे ही पहचानेंगे जिन्हें यह देखने के लिए एडवेंटिज़्म की नींव की ओर वापस ले जाया जाएगा कि इस्लाम की तीन विपत्तियाँ एक बुनियादी सत्य हैं। उस समय, जिन्हें उन प्राचीन मार्गों की ओर वापस ले जाया गया जिन्हें यिर्मयाह "विश्राम" (जो कि अंतिम वर्षा है) के रूप में पहचानता है, वे या तो ऐसे पहरेदार बनेंगे जो तीसरी विपत्ति का नरसिंगा फूँकते हैं, या वे ऐसे होंगे जो नरसिंगे की ध्वनि सुनने से इन्कार करते हैं और इस प्रकार प्राचीन मार्गों पर चलने से भी इन्कार करते हैं।

तब उनकी परीक्षा उनके पितरों की 1863 की बगावत के पाप से हुई। ठीक उसी समय मसीह की धार्मिकता का एक संदेश आया, जो "सत्य में विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना" है। वह जोन्स और वैगनर का लाओदिकीय संदेश था, और वह यहजेकल का मरी हुई सूखी हड्डियों के लिए संदेश भी था, जो "चार हवाओं" से आया था, जो तीसरे हाथ के इस्लाम का प्रतीक हैं (वह "क्रोधित घोड़ा" जो बन्धन तोड़कर छूटने को उद्यत है)। तब उन थोड़े से विश्वासयोग्यों की फिर परीक्षा उनके पितरों की 1888 की बगावत के पाप से हुई, जब प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह का शक्तिशाली स्वर्गदूत उतरा, जब न्यूयॉर्क नगर की बड़ी इमारतें ढहा दी गईं, और प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के पद एक से

तीन की पूर्ति हुई।

वे तब अन्तिम वर्षा के संदेश की पहचान द्वारा परखे गए। क्या अन्तिम वर्षा, बीते युगों की तरह, परमेश्वर की सामर्थ्य का प्रगटीकरण थी, या परमेश्वर की सामर्थ्य के प्रगटीकरण केवल अतीत में ही थे? फिर वफादार कुछ की परीक्षा 1919 में उनके पिता की बगावत की बगावत से हुई। उन तीन परीक्षाओं से वफादार कुछ कैसे गुजरते हैं, यह निर्धारित करता है कि वे अपने ललाट पर परमेश्वर की मुहर पाएँगे, या लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म के पच्चीस प्राचीनों के साथ सूर्य के आगे झुकते हुए स्वयं को पाएँगे।

लाओदीकियाई एडवेंटवाद की चार पीढ़ियों की सभी बगावतों का समकक्ष 11 सितंबर, 2001 में मिलता है। वह तिथि, जिसे यशायाह ने "पूर्वी पवन का दिन" के रूप में पहचाना, एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी के समय की शुरुआत को चिह्नित करती है, और मुहरबंदी का समय एक समय-अवधि है। इस अवधि का अंत उसकी शुरुआत द्वारा ही चित्रित किया गया है, क्योंकि यीशु हमेशा किसी बात के अंत को उसकी शुरुआत से ही दर्शाते हैं। मुहरबंदी की प्रक्रिया के अंतिम चरणों में वे परीक्षाएँ, जो अवधि की शुरुआत में दर्शाई गई थीं, एक बार फिर दोहराई जाती हैं।

11 सितंबर 2001 को, वे परीक्षाएँ आ गईं, जिनमें, जैसा कि यहजेकेल की चार घृणित कर्मों और प्रकाशितवाक्य के अध्याय दो और तीन की पहली चार कलीसियाओं द्वारा दर्शाया गया है, लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म के विद्रोही असफल रहे थे, और उनके आगमन ने उन लोगों के लिए जो अपने आप को सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कहते हैं, एक ऐसी परीक्षात्मक प्रक्रिया की शुरुआत को चिह्नित किया जो या तो पशु का चिन्ह या परमेश्वर की मुहर तक ले जाती है।

लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म का नेतृत्व अपनी ही छल-कपट की रस्सियों में फँस चुका है, और उनके लिए ईश्वर की शक्ति के उस प्रगटीकरण की पुनरावृत्ति को "पहचानना" लगभग असंभव हो गया है, जैसा कि पूर्ववर्ती सुधारवादी आंदोलनों द्वारा दर्शाया गया था, जिनमें वह सुधार आंदोलन भी शामिल है जिसने एडवेंटिज़्म को अस्तित्व में लाया। प्राचीन लोगों ने मिलकर के रत्नों द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए सिद्धांतों को नकली सिक्कों और रत्नों से बिखेर दिया और ढँक दिया। किंग जेम्स बाइबल की रत्न-पेटिका को पुरातन भाषा के काल की वस्तु मानकर वहीं सीमित कर दिया गया है, और उसकी जगह आधुनिक भाषा की बाइबलें लाई गई हैं जो पाप के मनुष्य की पारिभाषिक शब्दावली में व्यक्त की गई हैं।

यदि प्राचीन लोगों में से कोई यह संभावना मानने को तैयार भी होते कि अंतिम वर्षा का संदेश शांति और सुरक्षा का संदेश नहीं है, तब भी उनके लिए यह पहचान पाना लगभग असंभव होता कि भूतपूर्व पवित्र इतिहासों में परमेश्वर की शक्ति के जो प्रगटीकरण हुए, वही एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी की विशिष्ट पहचान हैं। उनके लिए इससे भी कठिन यह पहचानना है कि वे पवित्र इतिहास, जो एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी को सबसे प्रत्यक्ष रूप से चिह्नित करते हैं, वही पवित्र इतिहास हैं जो मलाकी अध्याय तीन को पूरा करते हैं, क्योंकि मलाकी अध्याय तीन यह स्थापित करता है कि वाचा के दूत के अकस्मात आगमन के लिए सदा एक दूत मार्ग तैयार करता है। वह दूत भविष्यद्वक्ता एलिय्याह द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया था, जिसने साहसपूर्वक घोषणा की कि उसके काल में, सिवाय इसके कि वह उसकी सेवा-कार्य के माध्यम से आए, वर्षा नहीं होगी।

यहजेकेल के सत्तर प्राचीनों को यह स्वीकार करना हास्यास्पद लगता कि प्रभु के मंदिर होने का उनका दावा निराधार था, और वास्तव में उन लोगों के दावे का प्रतिनिधित्व करता था जो उपेक्षित किए जा रहे थे, जैसे दाख की बारी उन लोगों को दे दी गई जो दाख की बारी के योग्य फल लाते हैं। तीसरे हाथ का संदेश, मार्ग तैयार करने वाला दूत, और दाख की बारी का गीत, ये सब उन परंपराओं और रीति-रिवाजों के विरुद्ध गवाही देते हैं जिन पर उन्होंने अपना भरोसा रखा था, और अन्तिम वर्षा को पहचानने में लगभग दुर्जेय बाधा बन जाते हैं।

एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी का समापन उन लोगों के लिए वही परीक्षाएँ प्रकट करता है जिन्होंने तीसरी विपत्ति में इस्लाम की भूमिका को "पहचानने" का दावा किया है। "ज्ञान की वृद्धि" जिसने मिलराइटों के आंदोलन की शुरुआत की, 1798 में "सात समय" के अंत में शुरू हुई। "ज्ञान की वृद्धि" जिसने एक लाख चवालीस हज़ार के

आंदोलन की शुरुआत की, 1989 में सांकेतिक "सात समय" (एक सौ छब्बीस वर्ष) के अंत में शुरू हुई। उन एक सौ छब्बीस वर्षों के लगातार बढ़ते धर्मत्याग के दौरान, लौदीकियाई एडवेंटवाद अपनी चौथी और अंतिम पीढ़ी तक पहुँच चुका है।

यही तीसरी और चौथी पीढ़ी होती है जब कोई राष्ट्र या लोग अपनी परख की अवधि का प्याला भर देते हैं, और वह समय अब आ पहुँचा है। दानिय्येल की पुस्तक का 'ज्ञान की वृद्धि', जो हिदेकेल नदी द्वारा दर्शाया गया है, वही ज्ञान है जो तब बढ़ता है, जब परख की अवधि समाप्त होने से ठीक पहले 'यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य' की मुहर खोली जाती है।

हम अगले लेख में दानिय्येल की पुस्तक के अंतिम तीन अध्यायों पर चर्चा करेंगे।

"वे दिन तेजी से निकट आ रहे हैं जब बहुत बड़ी उलझन और भ्रम होगा। शैतान, स्वर्गदूत के वस्त्र पहनकर, यदि संभव हो तो चुने हुए लोगों तक को भी धोखा देगा। अनेक देवता और अनेक प्रभु होंगे। हर सिद्धांत की हवा चलेगी। जिन्होंने 'कथित विज्ञान' को सर्वोच्च सम्मान दिया है, वे तब नेता नहीं होंगे। जिन्होंने बुद्धि, प्रतिभा या कौशल पर भरोसा किया है, वे तब साधारण जनसमूह के अग्रणी स्थान पर खड़े नहीं होंगे। उन्होंने प्रकाश के साथ कदम नहीं मिलाए। जिन्होंने अपने को अविश्वस्त सिद्ध किया है, उन्हें तब मंडली का भार नहीं सौंपा जाएगा। अंतिम गंभीर कार्य में कुछ ही महान पुरुष लगे होंगे। वे आत्मनिर्भर हैं, परमेश्वर से स्वतंत्र हैं, और वह उनका उपयोग नहीं कर सकता। प्रभु के पास विश्वासयोग्य सेवक हैं, जो हिला देने वाले, परख के समय में प्रकट होंगे। कुछ अनमोल लोग अभी छिपे हुए हैं जिन्होंने बाअल के आगे घुटना नहीं टेका। उन्हें वह ज्योति नहीं मिली जो केंद्रित तेज के साथ तुम पर चमक रही है। परन्तु सम्भव है कि खुरदरे और अरुचिकर बाहरी रूप के भीतर सच्चे मसीही चरित्र की निर्मल दीप्ति प्रकट हो। दिन में हम आकाश की ओर देखते हैं पर तारों को नहीं देखते। वे वहीं हैं, आकाशमंडल में स्थिर, पर आंख उन्हें अलग नहीं पहचान पाती। रात में हम उनके वास्तविक तेज को निहारते हैं।" टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 80, 81.